

सुनीता मलिक सोलंकी
मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

जीवन कठिन राह

जीवन कठिनाई का पुलिंदा ही तो है |बिन कठिनाईयों के जीवन नहीं हो सकता | हर किसी की अपनी अपनी तरह की कठिनाई होती है |कठिनाई बताकर नहीं आती ,
देखिए इस कहानी में --कभी कभी किस तरह बैठे बिठाए लेने के देने पड़ते है ?

एक ग्रामीण पति पत्नी हैं और उनके दो बच्चे एक बेटा एक बेटी| इन दम्पत्ति के दोनो ही बच्चे बाहर पढ़े लिखे और बाहर ही सैटल हो गये|

एक दिन महिला को कहीं किसी काम से शहर जाना था डाक्टर के पास था अन्य किसी कार्यवश जाना था| खुद के बच्चे दूर शहर पढ़ने गये हुए हैं |महिला पति के साथ गाँव में ही रहती है|

अब चूँकि गाँव में आज भी अपने और जेठ देवर के बच्चों में कोई फर्क नहीं रखता जाता , सब अपनों के बराबर है , गाँव की नीति अधिकांश फलीभूत भी होती है कि -बच्चे तो सभी के लिए बच्चे हैं | सब भाइयों का परिवार एक परिवार की तरह साथ निभाते है आज भी | भले ही अपना अलग घर और अलग कामधाम हो|

संयुक्त परिवार हो या ना हो मगर बच्चों को आज भी किसी ताऊ चाचा के लिए अपमान नहीं सिखाया जाता जो खानदानी परिवारों की पहचान होते है | उनका अपना लहजा अपना तरीका होता है |

तो जाहिर है महिला ने बेझिझक अपने जेठ के बेटे से लिफ्ट ली, कहा बेटा कल तू शहर जाएगा तो मुझे भी लिये चलना |कयी काम हैं मेरे शाम को तेरे साथ ही वापस आ जाऊँगी बेटा|

और वह जेठ के बेटे की बाइक पर बैठ कर अपने गंतव्य की ओर चल दी |

कुछ ही दूर चलने पर रास्ते में महिला अचानक उछली और गिर गयी ! और उसपर घर बैठे बिठाए ही दुखों का पहाड़ टूट पड़ा|

जेठ का बेटा जिसका नाम देवेन्द्र था | वह घबरा गया |मगर फिर भी बहादुरी का परिचय देते हुए एक कार से लिफ्ट माँगी और अपनी चाची को डॉक्टर के पास ले गया , तो डाक्टर से मालूम हुआ कि- महिला (देवेन्द्र की चाची) कोमा में जा चुकी है | अब घर में उसके चाचा और उनके बच्चों के सिर पे बैठे बिठाए मुसीबत आ गयी, यही सोचकर देवेन्द्र मानसिक रूप से व्यथित होकर चाचा चाची की मदद को संकल्पबद्ध हुआ|

अब चूँकि महिला के पति सरकारी टीचर हैं, नौकरी भी करनी और बीवी बच्चों की देखभाल भी करनी !कठिन काम हो गया उनके लिए भी|

गाँव में दोनो पति पत्नी आराम से रह रहे थे| अब धीरे धीरे कुछ साल बीते बेटा बड़ा था मतलब शादी लायक हो चुका था|

शैने- शैने दिन बीतते गये तो बेटे की शादी का विचार किया जाने लगा , लडकी वालों की आवभगत होने लगी|

इत्तेफ़ाक से बेटे की शादी भी तय हो गई |

होने वाली पत्नी एक शिक्षिका थी | बेटा दिल्ली में जॉब करता था | फादर जो कि गाँव के पास किसी गांव में टीचर थे| सब देखभाल अकेले नहीं कर पा रहे थे पत्नी की | इसलिए भी बेटे की शादी थोडा जल्दी या यूँ कहिए आनन फानन में कर ली|

जल्दी इसलिए भी कर ली कि - घर में एक महिला आ जाएगी तो कुछ सहायता मिलेगी, कम से कम खाना तो समय पर मिलता ही रहेगा , और कोमा से उबर चुकी रोशनी देवी , जिसके हाथ पैर और जुबान फालिस का शिकार है| उनको भी एक बेटी मिल जाएगी मदद करने के लिए|

मगर बहू तो छः महीने बाद ही पति के साथ रहने शहर में चली गई। वहीं से साझा टैक्सी से स्कूल आने जाने लगी।
उधर पिता परेनान स्कूल भी जाना पत्नी की देख रेख भी करना। वो तो देवेन्द्र की माँ और पत्नी साथ निभा रही है अध्यापक ब्रह्मसिंह का। कि उनके स्कूल जाने पर उनकी पत्नी की देखभाल करती है।
बेटे ने एक दिन कहा - पिताजी आप माँ को हमारे पास ले आइए यहाँ गाँव के मुकाबिल अच्छे डाक्टर हैं, और देखभाल भी होगी। हम सब अगर साथ रहेंगे।
बेटे की यह बात सुन मास्टरजी मन ही मन खुश हुए और भगवान को धन्यवाद दिया कि- बेटे को समय रहते अक्ल दे दी भगवान तूने।
अपनी बीमार बीवी के साथ बेटे के घर ही रहने चले गये मास्टर ब्रह्म सिंह यह सोच कर कि - मैं ही आवागमन कर लूंगा थोड़ा अधिक। मेरा सब परिवार आराम से रहेगा तो मेरे मन को सुकून मिलेगा।
और हम सब साथ रहें तो पत्नी की देखभाल बेटा बहू करेगे मैं स्कूल आ जाता हूँ जब।
मास्टरजी के कुछ महीने तो शहर से आने जाने में सही गुजरे ।रोज शहर से गाँव आते और शाम तक बच्चो के पास पहुंच कर बीवी की देखभाल करने लगे। और समय मिलने पर बेटे के घरेलू कार्यो में भी मदद कर दिया करते।
मगर मनचाहा कभी पूरा कहां होता है ? बहू को बीमार सास को रखना अब अच्छा नहीं लग रहा था ....वह थक गई थी अब अपनी जिन्दगी जीना चाहती थी बिन्दास किसी बंधन के। इसलिए अब
बहू नित नये बहाने ढूँढने लगी क्लेश करवाने के लिए।
रोज रोज की किच किच से परेशान होकर ,एक साल बहू के पास रहने के बाद ही मास्टरजी अपनी बीवी को लेकर गांव आ गये।
और जो पत्नी की केयर टेकर जो कि -बहू के पास रहते हुए भी लगा ही रखी हुई थी। गांव में भी पास के अस्पताल से एक नर्स हायर कर ली गई।
जिसका सारा खर्च भी मास्टर जी खुद उठा रहे थे। एक भी पैसा बेटे से खर्च नहीं करवाते थे बीवी की बीमारी में।
क्यों कि सारा खर्च खुद करते थे मास्टर जी। तो पैसे की कमी तो थी ही नहीं , बस देखभाल के लिए चाहिए था कोई दूर से केयर टेकर पर निगाह रख सके जो , वह कोई अपना हो।
क्यों कि गाँव की खेती बाड़ी से भी सालाना कुछ न कुछ मिलता ही था। कहते हैं,कोमा में इंसान भले बोलता नहीं , मगर वह सुनता सब है ,और अब वह महिला कोमा से भी बाहर थी , बस जुबां पर फालिस की वजह से बोल नहीं पाती थी।
सास को बहू के कहे ताने छींटाकशी कष्ट पंहुचा रहे थे ....जिस वजह से सास ठीक होने के बजाय और बीमार होती जा रही थी बहू के पास रहकर। यह बात इशारे से ही महिला ने अपने पति ब्रह्मसिंह को समझा दी थी।
और आज गांव में लाने का नतीजा यह कि - अब सास खुश नजर आती है , गांव में कुटुंब की सब महिलाएं मिलने आती जाती रहती है , खुश रहने से चेहरे पर रौनक आ गयी महिला के।
और कुछ एक्टिव सी भी रहने लगी ।मास्टरजी का स्कूल भी गांव से ही नजदीक पड़ता था अब उन्हें भी सुबह सुबह की भागमभाग नहीं रही।
बेटे बहू को छोड़कर, गांव में अब अपने भाई के परिवार के साथ ब्रह्मसिंह खुश है।
अब जब कभी कभी बहू का फोन आता है ससुर के पास कि - पापा आप तो गुड़िया (पोती) को छोड़कर चले गये, इससे मिलने आ जाओ , यह दादू को याद करती रहती है यह।
तो ससुर ने मुस्कुराते हुए कहा- बेटी तू अपनी गुड़िया को देख अब , मैं मेरी गुड़िया (बुढिया) को देख रहा हूं आजकल..! और हम दोनों अपने कुटुंबियों के साथ ठीक ही हैं ,स्वस्थ हैं,
तू अपनी गुड़िया को खुद संभाल । और खुश रहों मेरे बेटे और मेरी पोती के साथ।